विश्व वाणी
समर्पण

Vol. 17 - Issue 7 - July 2024 - Rs. 10/-

सुसमाचार जो इसे स्वीकार करते हैं वे प्रभु के लोग हैं,
जो इसे घोषित करते हैं वे प्रभु की सेना हैं!

विश्ववाणी समर्पण
July 2024

विश्ववाणी समर्पण पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगू, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगला, कोंक बोरोक व सौरा भाषा में प्रकाशित होती है। वार्षिक शुल्क 100 रू. है।

उत्तर भारत कार्यालयः
एफ–11, प्रथम मंजिल, विश्वकर्मा कॉलोनी
एम.बी रोड, नई दिल्ली – 110044
फोनः 0129–4838657
ई–मेलः vvnorthindia@vishwavani.org

प्रकाशन कार्यालयः
1.10.28/247, आनंदपुरम, कुशाईगुड़ा
ई.सी.आई.एल पी.ओ., हैदराबाद – 500062
फोनः 040–27125557,
ई–मेलः samarpan@vishwavani.org

विषय सूची

02 मनन के विषय
03 कार्यकारी निर्देशक...
07 मसीह विश्वास...
10 विशेष आकर्षण
14 बाइबल अध्ययन
20 नेटवर्क चेयरमैन...
22 प्रेयर नेटवर्क निर्देशक...
25 कार्यक्षेत्र के समाचार

यह देख सकें कि
यीशु मसीह के महिमामय सुसमाचार के द्वारा
भारत के गाँव आशीषित हो सकें!

भाई एमिल जेबासिंह के
मनन के विषय

- सुसमाचार – यदि हम स्वीकार करते हैं –
  हम परमेश्वर के लोग हैं
  यदि हम घोषणा करते हैं – हम परमेश्वर की सेना हैं!
- 'परमेश्वर के लोग' का अर्थ है प्रेम,
  'परमेश्वर की सेना' का अर्थ है एकता!
  कलवरी प्रेम के लिए है ऊपरी कक्ष एकता के लिए है!
- सुसमाचार –
  स्वीकार किया गया लेकिन घोषित नहीं किया गया
  यह उस घर की तरह है
  जिसे साफ और सजाया गया है,
  इसके बाद के दिन पहले के दिनों से भी
  बदतर होंगे!
- लोग पैदा होते हैं और मरते हैं,
  लेकिन परमेश्वर के लोग नहीं मरेंगे,
  सेनाएँ उठती हैं और विफल होती हैं
  लेकिन परमेश्वर की सेना कभी नहीं मिटेगी!
- जब हम क्रूस के पास आते हैं,
  तो हम परमेश्वर के लोग होते हैं,
  जब हम क्रूस उठाते हैं,
  तो हम परमेश्वर की सेना होते हैं!
- दुनिया की सेना शरीर को काटने के लिए
  तलवार रखती है,
  लेकिन परमेश्वर की सेना आत्मा को
  छेदने के लिए तलवार रखती है!
- लाल सागर फिरौन की सेना को निगल गया
  लेकिन इसने परमेश्वर की सेना को रास्ता दे दिया!
- लोगों के नाम धूल पर लिखे गए हैं,
  परमेश्वर के लोगों के नाम जीवन की पुस्तक में
  लिखे गए हैं!
- सेवक की आँखों ने सेना को देखा
  एलियाह की आँखों ने परमेश्वर की सेना को देखा!
- परमेश्वर के लोगों के रूप में,
  हमें नए जीवन की आवश्यकता है
  परमेश्वर की सेना के रूप में
  हमें सुसमाचार कार्य की आवश्यकता है!

कार्यकारी निर्देशक की ओर से पत्र

प्रभु यीशु मसीह के अद्भूत नाम में आपको हमारा हार्दिक नमस्कार!

मैं इस वित्तिय वर्ष में पिछले 3 महीनों मे की गई सेवकाई को आशीषित करने के लिए प्रभु को धन्यवाद देता हूँ। हम विश्वासियों के जीवन में सामर्थी रूप से काम करने के लिए प्रभु के नाम की महिमा करते हैं और ऐसे ही हजारों विश्वासियों के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं। आइए, हम इस महान कार्य में हमें अनुग्रह पूर्वक उपयोग करने के लिए प्रभु के प्रति अपना आभार व्यक्त करें। सुसमाचार क्षेत्रों में परमेश्वर के उन लोगों की संख्या जिन्होंने विश्वास और विनम्रता के साथ सुसमाचार को स्वीकार किया है, अत्यधिक बढ़ रही है। स्थानीय सुसमाचार प्रचारकों और प्रार्थना सहयोगी भी प्रभु की सेना के रूप में कार्य क्षेत्रों में उमड़ रहे हैं। प्रभु का नाम और ऊँचा हो!

सुसमाचार को आन्नद पूर्वक स्वीकार किया:

पिन्तुकुस्त के दिन प्रारंभिक कलीसिया के समक्ष प्रेरित पतरस का पहला उपदेश प्रेरितों के काम अध्याय 2 में वर्णित है। यहाँ उसने अपने विचार, सिद्धान्त और अनुभवों को नहीं बाँटा है, बल्कि उसने यीशु मसीह के जीवित वचन बोले जो मृत्यु और शैतान पर विजयी थे (प्रेरितों के काम 2:14–36)। प्रेरितों के काम 2:41, 13:48 और 17:11 से पता चलता है कि लोगों ने परमेश्वर के उस वचन को स्वीकार किया जो उनके लिए प्रचार किए गए थे।

हालाँकि बहुतों ने परमेश्वर के वचन को सुना, किन्तु उनमें से अधिकांश ने उस पर विश्वास नहीं किया और इसलिए उनके हृदय में कोई परिवर्तन नहीं आया। एथेंस शहर के धनवान और बुद्धिमान लोग और अन्य लोगों ने प्रेरित पौलुस के उपदेशों पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने उसका मजाक उड़ाया और पश्चाताप् को रोकने का निर्णय किया (प्रेरितों के काम 17:32)। वे भूल गए कि अगला दिन उनके हाथ में नहीं बल्कि परमेश्वर के हाथ में था। इतिहास से पता चलता है कि जिन लोगों ने विश्वास किया और सक्रिय रूप से सुसमाचार को स्वीकार किया, उनकी संख्या बढ़कर 3000 (2:41) हो गई, फिर 5000 (4:4) और बाद में यह अनगिनत हो गई (5:14, 11:21)! यह अन्ताकिया ही था जहाँ विश्वासियों को सबसे पहले मसीही कहा गया। मुझे एमिल अन्नन के वे शब्द याद है: मैं यीशु को स्वीकार करूँगा, न कि संसार को, न मनुष्यों को, न शैतान को जो मुझे नीचे खींचने की कोशिश कर रहा है, बल्कि मैं केवल यीशु को स्वीकार करूँगा (प्रेरितों के काम 16:30–34)।

सच्चाई के साथ सुसमाचार की घोषणा की:

प्रभु यीशु संसार के सभी लोगों से प्रेम करता है। जो लोग प्रभु के नाम की आराधना करते हैं, वे सभी बचाए जाएँगे। प्रेरित पौलुस ने रोमियों 10:12–18 में सत्य को प्रकट किया है कि जब तक सुसमाचार का प्रचार नहीं किया जायेगा, तब–तक संसार को पापों से छुटकारा नहीं मिल सकता। आप भी बाइबल के निम्नलिखित अंशों में इस सच्चाई पर मनन कर सकते हैं और अपने भीतर के मनुष्य को मजबूत कर सकते हैं। यूहन्ना 3:16, 7:37, 5:24, 1यूहन्ना 4:15, 5:1)। प्रचारक के बिना हम सुसमाचार कैसे प्रचार कर सकते हैं? जब लोग सुसमाचार सुनने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तब पूर्णकालिक सुसमाचार प्रचारक या स्वतंत्र कार्यकर्ता उनके साथ सुसमाचार बाँटते हैं। लेकिन उन्हें किसी विशेष समूह के लिए भेजा जाना चाहिए या उन्हें स्वेच्छा से जाकर जरूरतमंदों तक पहुँचना चाहिए (यूहन्ना 15:16, 2कुरि.5:20, इफि.3:7, मरकुस 16:15)। निम्नलिखित सुसमाचार प्रचारक के कुछ चरित्र हैं जो आत्माओं को जीतने के लिए सुसमाचार को

सत्य के रूप में बाँटते हैं:

1. नाश हो रही आत्मा के लिए तरस

तरस/करूणा शब्द चिंता शब्द से ज्यादा शक्तिशाली है। इसे अधिकांशतः प्रेम से काम करने के रूप में परिभाषित किया जाता है। प्रेम से काम करना जरूरी है। कृपया लूका 15:20, मरकूस 1:40–41 पढ़ें और उनका अनुसरण करें।

2. पिता की उत्तम इच्छा के प्रति सर्मपण

यीशु ने यूहन्ना 4:34 में कहा कि मेरा भोजन यह है कि मैं अपने भेजने वाले की इच्छा को अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं। पिता की इच्छा थी कि कोई भी नाश न हो (1तीमु.2:4)। हम जानते है कि इसी कारण से प्रभु दूसरा आगमन अब तक नहीं हुआ है (2पत.3:9)। यूहन्ना 20:21 में यीशु ने फिर से जोर दिया "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ"।

3. समय की अत्यावश्यकता/अविलंबिता का ज्ञान!

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा की क्या तुम नहीं कहते कि "कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े है? क्योंकि खेत कटनी के लिए तैयार हैं (यूहन्ना 4:35)। यीशु हमे चेतावनी देते हुए कहता है "जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है, वह रात आने वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता"(यूहन्ना 9:4)। "अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं" (इफि. 5:16)।" जो हम कर रहे हैं, वह अच्छा काम नहीं है। यह आन्नद के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें तो हमको दण्ड मिलेगा, इसलिए अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें (2राजा 7:9)।

सुसमाचार कार्य में सेवकाई के सहयोगीगणः

आत्माओं की कटनी अत्यधिक आन्नद को लाता है (लूका 15:7)। लेकिन अधिकांश मसीही इस कार्य में पूरे हृदय से शामिल नहीं होते (नीति.29:18)। अधिकांश लोग सुसमाचार प्रचार में आत्माओं की कटनी को नजरअंदाज करते हैं क्योंकि सुसमाचार कार्य में विरोध, शैतान की शक्तियों के परिणामस्वरूप रूकावटें, असफलता का डर, सुसमाचार कार्य में तुरन्त परिणाम न मिलना, स्वयं के लिए आत्म सम्मान में कमी, बाइबल के बारे में पूर्ण समझ न होना, क्योंकि वे अन्य धर्मों के लोगों द्वारा उठाए गए सवालों के लिए उचित स्पष्टीकरण देने में असमर्थ हैं, इन सब कारणों से बहुत से लोग आत्माओं की कटाई से बच रहे हैं। प्रेरित पौलुस ने 2कुरि.5:1–20 में स्वयं को एक उदाहरण के रूप में चित्रित किया है और उन कारणों को प्रकट किया है कि कैसे एक विश्वासयोग्य सेवक या एक विश्वासी सेवकाई में भागीदार बन सकता है।

1. हमे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना घर नहीं, परन्तु चिरस्थायी है (पद 1:8)।

2. इस संसार में मसीह को प्रसन्न करना (पद 9)।

3. हम सभी को मसीह की न्याय आसन के सामने खड़े होने का डर (पद 10)।

4. मसीह का प्रेम हमें विवश करता है(पद 14)।

5. मसीह ने हमें मेल–मिलाप की सेवकाई सौंप दी है, यह मनुष्यों की ओर से नहीं (पद 18–20)

सुसमाचार कार्य के फलों के लिए प्रभु की स्तुति होः

· पिछले दो महीनों के सुसमाचार क्षेत्रों में मसीह ने अपने विश्वास को स्वीकार करने वाले 1065

नये विश्वासीयों और बपतिस्में के लिए तैयार हो रहे अन्य 12,433 नए लोगों के लिए प्रभु की स्तुति हो।

· इस वित्तिय वर्ष के तीन महीनों के दौरान कार्य क्षेत्रों में समर्पित किए गए 20 नये आराधना भवनों और निर्माणाधीन 98 आराधना भवनों के लिए प्रभु की स्तुति हो।

· पठानकोट में एक प्रशिक्षण केंन्द्र के निर्माण के लिए खरीदी गई भूमि के लिए अग्रिम राशि देने में सक्षम बनाने के लिए प्रभु की स्तुति हो, जो विशेष रूप से उत्तर भारत के सुसमचार सेवकों के लिए है।

· पश्चिम तमिलनाडु, उत्तर भारत, आन्ध्र और तेलंगाना राज्य शिविरों के सफल समापन के लिए प्रभु की स्तुति हो।

· कटनी के स्वामी की स्तुति हो क्योंकि 49 स्थानीय सुसमाचारिय सेवकों ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है और कार्य क्षेत्रों में अपने पाँव रख दिये हैं।

· प्रभु की स्तुति करें क्योंकि विश्ववाणी अवकाशकालीन बाइबल स्कूल के माध्यम से 16,720 बच्चे लाभावित हुए है, जो विशेष रूप से सुसमाचार कार्य हो रहे क्षेत्रों के बच्चों के लिए आयोजित किया गया।

· प्रभु की स्तुति करें उन आदिवासी बच्चों और पूर्णकालिक सेवकों के बच्चों के लिए जिन्होंने अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए हैं और उच्च शिक्षा में आगे बढ़ रहे हैं।

· समर्पण पत्रिका के लिए प्रभु की स्तुति हो जो 12 भाषाओं में प्रकाशित होती है। यह हमारी सेवकाई के दर्शन को एक लाख साठ हजार परिवारों तक पहुँचा रही है।

· सामाजिक विकास कार्यक्रमों और सोसाइटी फॉर केयर एण्ड नीडि के लिए प्रभु की स्तुति हो जो हजारों परिवारों के लिए लाभकारी हैं।

सहयोगियों से विनम्र अनुरोधः

· कृपया समर्पण पत्रिका के लिए वार्षिक सदस्यता शुल्क के रूप में 100/– रूपये अवश्य भेजें। कृपया पत्रिका पढ़ें और प्रतिदिन सेवकाई के लिए प्रार्थना अवश्य करें। उचित संचार/पत्र व्यवहार के लिए अपने बदले हुए पते भी अवश्य भेजें।

· कृपया बचत बॉक्स में अपना दान अवश्य डालें और हमें तीन या छह महीने में एक बार भेजें। अपने बच्चों को भी सेवकाई में सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

· कृपया हर महीने 4000/– रूपये मासिक दान भेज करके इस सेवकाई को आगे बढ़ाएँ ताकि सुसमाचार वंचित गाँव में सुसमाचार पहुँचाया जा सकें।

· कृपया सेवा से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष दान भेज कर अपना सहयोग दें।

· अपने क्षेत्र और कलीसिया के इस सेवकाई को प्रस्तुत करने के लिए स्वैच्छिक प्रतिनिधि बनने के लिए आगे आएँ।

· हमें ऐसे समर्पित व्यक्तियों और परिवारों की जरूरत है जो दूसरों को इस सेवकाई से परिचित करा सकें।

· कृपया दान देते समय मिलने वाली रसीद में अपना मोबाइल नंबर अवश्य लिखें/लिखवायें।

आपके सभी सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद।

इंडिया मिशन एशोसिएशन – ग्लोबल मिशन सम्मेलन

भारतीय मसीही संगठनों के 220 सी.ई.ओ ने आई.एम.ए में भाग लिया जो मिजोरम प्रेस्बिटेरियन सीनोड द्वारा आयोजित ग्लोबल मिशन शिखर सम्मेलन 11 से 13 जून 2024 तक आइजोल में आयोजित किया गया था। मेरे साथ, विश्ववाणी के क्षेत्रीय निर्देशक रेव्ह.डॉ.एम.ऑगस्टीन और रेव्ह. डॉ.आशानंद लीमा भी इसमें सम्मिलित थे। प्रभु ने हमें मूल कार्यकर्ताओं और भारतीय विश्वासियों के योगदान के माध्यम से "मिशन/उद्देश्य, सुसमाचार से वंचित दुर्गम क्षेत्र" (1कुरि.10:16) पर गहराई से विचार करने और चर्चा करने के लिए गुणवत्तापूर्ण समय प्रदान किया। हमने सेवकाईयों को मजबूत करने की योजना बनाने पर भी बहुमूल्य समय बिताया। मैंने 14 जून 2024 को भारत मिशन एशोसिएशन की ए.जी.एम में भी भाग लिया। प्रभु हमें मिजोरम में प्रेस्बिटेरियन कलीसियाओं के साथ साझेदारी करने और हमारे दर्शन को पूरा करने के लिए क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को दुर्गम क्षेत्रों में भेजने में हमारा मार्गदर्शन करें।

मणिपुर राहत कार्य

मैंने 15.06.2024 को दूसरी बार मणिपुर का दौरा किया और चौथे चरण की राहत योजना में भाग लिया। हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने हमें काकचिंग, बिशनुपुर और पश्चिम इंफाल जिलों के 200 परिवारों को 2000/– रूपये के चावल और बुनियादी ऊनी कपड़े वित्तरित करने में सक्षम बनाया।

मणिपुर की शांति के लिए प्रार्थना करना जारी रखें क्योंकि यहाँ अब भी कभी–कभी समस्याऐं होती हैं, भले ही स्थिति नियंत्रण में हो। कृप्या राहत कार्य में अपना योगदान दें। परमेश्वर ने अनुग्रह पूर्वक हमारे सुसमाचार सेवकों और उनके परिवारों की रक्षा की है, और वे विश्वास के साथ अपनी सेवा को जारी रख रहे हैं। हम आपकी प्रार्थनाओं और सहयोग के लिए आपका हृदय से धन्यवाद करते हैं।

आप परमेश्वर के कार्य में हमारा साथ देते हैं, प्रभु आपके परिवार को भरपूर आशीष प्रदान करें।

तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा...
और चेले आन्नद से और पवित्र आत्मा से पूर्ण होते गए
(प्रेरितों के काम 13:49,52)

चैन्नई
16.06.2024

प्रभु की सेवकाई में
रेव्ह. डॉ. डब्ल्यू.विल्सन ग्नानाकुमार

मसीही - विश्वास व सेवा में बढ़ते जायें

प्रभु में प्रियों!

"सुसमाचार – जो इसे स्वीकार करते हैं वे प्रभु के लोग हैं, जो इसे घोषित करते हैं वे प्रभु की सेना हैं!" इस विषय के साथ यह अंक आप तक पहुँच रहा है! आशा है इसे पढ़कर आपका सेवकाई में प्रार्थना का बोझ बढ़ेगा, साथ ही सेवकाई में भेजे जाने की आशीषों को भी आप प्राप्त करते जायेंगे।

आप जानते हैं कि जब परमेश्वर ने अब्राहम को अपने देश व जन्म भूमि से बुलाया तो उससे यह भी वायदा किया "मैं तुझे आशीष दूँगा और तू आशीष का मूल होगा (उत्पत्ति 12:1) तो यों अब्राहम परमेश्वर की बुलाहट में आज्ञाकारी रहा तथा परमेंश्वर की आशीषों का भागीदार भी बना।

यह स्मरण रखें कि परमेश्वर जब हमें बुलाता है तो कुछ आज्ञायें भी देता है, साथ में आशीषें भी जोड़ता है। प्रियों आप थोड़ा अपनी बुलाहट के बारे में सोचें? कैसे प्रभु ने आपको चुना व बुलाया? कब प्रभु ने आपको चुना व बुलाया व क्यों प्रभु ने आपको चुना व बुलाया? कुरन्थ की कलीसिया जहाँ अनेकों समस्यायें थी उनसे पौलुस ने यह प्रश्न किया "थोड़ा अपने बुलाये जाने को तो सोचो" अभी हमारे देश में देशव्यापी चुनाव समाप्त हुये, फिर 5 वर्ष बाद एक बार फिर नया चुनाव होगा। क्या कभी आपने अपने चुनाव व बुलाहट के विषय में विचार किया? पौलुस के शब्दों में "यह स्वर्गीय बुलाहट है, यह बहुत ऊँची बुलाहट है, यह अनन्तकाल की बुलाहट है" अब चूँकि यह ऐसी महान बुलाहट है, तो हमें इस बुलाहट में अब्राहम के समान आज्ञाकारी निकलना है – ताकि ज्ञानवानों को, बुद्धिमानों को, बलवानों को लज्जित करें। कैसे करें? क्या लड़ाई झगड़ा करके लज्जित करना है? क्या संसार के लोगों के जैसा अन्धकार के काम करके उन्हे लज्जित कर पायेंगे? नहीं, बल्कि परमेश्वर की बुलाहट के अनुसार; उसके सुसमाचार की पत्री बनकर, व पिता के कलवरी क्रूस के प्रेम को बाँटकर हम दूसरों को निरूतर कर सकते हैं।

क्या सेवकाई की जो आशीषे हैं आप उसका भागीदार बनना चाहते हैं? प्रियों यों तो प्रभु यीशु में उसके लोगों के लिये आत्मिक आशीषें वायदे मे दी गई है, किन्तु जब उसकी बुलाहट के अनुसार सेवकाई में आगे बढ़ते हैं तो हम उनको व्यवहारिक रूप में अनुभव करना आरम्भ कर देते हैं।

छुटकारे की आशीष के लियेः मूसा को भेजा।

400 वर्ष से इस्राइली मिस्र में रह रहे थे तथा यूसुफ की मृत्यु के बाद उनकी दुदर्शा प्रारम्भ हो गई, वे कराहने लगे परमेश्वर की दोहाई देने लगे तो उनकी दोहाई परमेश्वर तक पहुँच गई (निर्गमन 2:23) परमेश्वर ने मूसा से कहा मैं तुझे फिरौन के पास भेजता

हुँ कि तू मेरी इस्राइली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आये (निर्गमन 3:10) यहाँ पर निर्गमन की पुस्तक में मूसा बार–बार फिरौन के पास जाकर परमेश्वर के संदेश को कहता है "कि मेरे लोगों को जाने दें, कि वे जंगल में मेरी उपासना करें।"

प्रियों! फिरौन के बन्धन में रहकर उनकी उपासना व आराधना सब समाप्त हो गयी थी इसलिये उनके छुटकारे की बार–बार याचना की गई ताकि वे निकल कर उपासना करें।

आज हमारे इर्द–गिर्द, देश व समाज में करोड़ों लोग हैं जो ऐसै ही सामाजिक, संसारिक बन्धनों से बन्धे हैं उनके छुटकारे का कार्य प्रभु ने क्रूस पर पूर्ण कर दिया अब केवल जाकर बताना है, उन गाँवों में, जहाँ कोई नही गया, किसी को जाना है। क्या आप किसी प्रचारक को भेजना चाहेंगे?

पापों की क्षमा की आशीष के साथः यशायाह को भेजा

जब यशायाह ने परमेश्वर के भव्य दर्शन को पाया तो कहने लगा "मैं अशुद्ध होंठ वाला व्यक्ति हूँ" अशुद्ध होंठवाले लोगों के बीच रहता हूँ (यशायाह 6:5) यह अंगीकार जब मनुष्य करता है तो समझ लीजिये कि उद्धार का कार्य व आत्मा का कार्य जीवन में प्रारम्भ हो रहा है। जैसे ही यशायाह ने अंगीकार किया "तो परमेश्वर ने उसके होंठो को छू लिया तथा उसका अधर्म दूर किया व उसके पाप क्षमा हो गये" (यशायाह 6:7) किन्तु यहाँ पर आशीष की बात यह है कि जैसे ही उसके पाप क्षमा हुये तो उसके पास एक बुलाहट आई मैं किसको भेजूँ? प्रियों! मसीही विश्वासियों को प्रभु की आवाज़ सुनना जरूरी है। ध्यान दीजिये पाप क्षमा के पश्चात् बुलाहट आ रही है। अब यशायाह ने किसी दूसरे साथी का, व पुराने भविष्यद्वक्ता का नाम नहीं लिया बल्कि स्वयं को उपस्थित कर दिया "मैं यहाँ हूँ मुझे भेज (यशायाह 6:8) परमेश्वर ने उससे कहा जा (यशायाह 6:9) प्रियों! ध्यान रखें जो उद्धार पाया व्यक्ति है वह स्वर्गीय बुलाहट का व्यक्ति है उसे प्रभु के लिए उपलब्ध होना है।

सुसमाचार के कार्य में सहकर्मी बनना है, दूर दराज गाँव के लिये जहाँ वह जा नही सकते किसी को भेजना है, बाइबल कहती है कि जब तक भेजे न जायें वह कैसे सुनेंगे? क्या आप यशायाह के जवाब पर विचार करेंगे मैं यहाँ हूँ मुझे भेज।

दो दो की आशीष के साथः चेलों को भेजा!

जब प्रभु ने चेलों को पहाड़ी पर धन्य उपदेश देकर तैयार किया तो नीचे उतरने के बाद उन्हे दो–दो करके परमेश्वर के राज्य का सन्देश सुनाने के लिये भेजा (लूका 10:1) उन्हे प्रभु ने पूरा मार्गदर्शन देकर दो–दो करके भेजा प्रियों थोड़ा इस भेद को समझने की कोशिश करेंगे कि प्रभु ने क्यों दो–दो करके भेजा ? बाइबल कहती है एक से दो अच्छे क्योंकि उनके परिश्रम का फल अच्छा मिलता है। ... यदि एक गिरे तो दूसरा उसको उठायेगा, परन्तु हॉय उस पर जो अकेला गिरे और उसका उठाने वाला कोई न हो, फिर दो जन एक संग सोयेंगे तो वे गर्म रहेंगे। ..... जो डोरी तीन धागों से बंटी

हों जल्दी टूट नहीं सकती " (सभोपदेशक 4:9)। प्रियों इन चार पदों को पढ़कर दो–दो करके भेजने का भेद समझ में आ रहा होगा, यहाँ पर यह एक से दो अच्छे क्यों हैं? पहली बात अच्छा फल मिलता है, दूसरी बात एक दूसरे का सहारा मिलता है। तीसरी बात उनमें आत्मिक गर्मी रहती हैं – स्वयं हमारे प्रभु ने भी कहा जहाँ दो या तीन जन मेरे नाम से इकट्टा होते हैं मैं उनके बीच रहता हूँ। चौथी बात यहाँ पर तीन डोरी वाले धागे से उनकी तुलना की गई है कि वह जल्दी टूटता नहीं, अर्थात् वह मजबूत रहती है। प्रियों! दो–दो करके प्रार्थना दल बनायें व प्रार्थना करें, दो–दो करके सुसमाचार के लिये सेवकों को भेजें। अभी इसी सप्ताह एक बहन ने मुझे फोन से बताया कि हम दो बहने मिलकर एक गाँव गोद लेना चाहते हैं, किसी विश्ववाणी के सेवक को आप भेज दीजिये प्रियों यह भेद तो उन पर प्रभु ने प्रगट किया, यद्यपि वे प्रभु को जानते हैं, विश्ववाणी को भी जानते हैं अब इस दो–दो के भेद की सेवकाई को भी समझ गये हैं.... इसके लिये प्रभु की स्तुति हो।

हाथ रखने की आशीष के साथः शाऊल और बरनावास को भेजा!

जब कलीसिया उपवास प्रार्थना में लौलीन थी तभी पवित्रआत्मा ने कहा "मेरे लिये बरनबास और शाउल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हे बुलाया है "(प्रेरितों 13:2) प्रियों कलीसिया को आत्मा की आवाज़ को सुनना आवश्यक है, बाइबल कहती है जिसके कान हो वह सुन ले आत्मा कलीसिया से क्या कहती है, सदैव अपने कानों को खुला रखें। प्रियों जैसे ही यह आवाज़ कलीसिया के पास आई उन्होने "उन पर हाथ रख कर विदा किया "(प्ररितों 13:3) यहाँ पर हाथ रखने का क्या तात्पर्य है? अर्थात् कलीसिया आपके साथ है। जी हाँ! आज अन्ताकिया की कलीसिया के समान अनेकों कलीसियाओं की आवश्यकता है। क्या आपकी कलीसिया या आपका परिवार भी सुसमाचार में हाथ देकर आगे बढ़ रही है। यदि नहीं तो अभी भी द्वार खुला है कृपया सेवकाई के लिये भेजकर आशीषित हों।

प्रियों! बुलाये गये हैं। तो अपनी बुलाहट के बारे में सोचें, सेवकाई के कार्य में आगे बढ़ें व आशीषित हों। आमीन

नई दिल्ली
21.06.2024

प्रभु में आपका भाई
आनन्द सिंह

ऑनलाइन दान करें

Bank : State Bank of India A/C Name: VISHWA VANI
A/C No. : **1015 1750 252** IFS Code : **SBIN0003273**
Branch : Amanjikarai, Chennai - India.

Please update us with transaction information so that we acknowledge with receipt ✆ 9443127741, 9940332294

UPI ID
vvadmin@sbi
UPI Name:
VISHWAVANI

जुलाई 2009 समर्पण के लिए भाई एमिल जेबासिंह द्वारा लिखा गया विशेष आकर्षण:

सुसमाचार

जब हम स्वीकार करते हैं - हम परमेश्वर के लोग बन जाते हैं
जब हम घोषणा करते हैं - हम परमेश्वर की सेना बन जाते हैं!

प्रिय,

"सुसमाचार रथ" दुनिया के सभी देशों से होकर
भारत की सभी सड़कों से होकर गुजरता है!
रथ में उन सभी के लिए जगह है जो सुसमाचार की इच्छा रखते हैं!
सभी के लिए एक अवसर है! सभी का स्वागत है!
न तो उम्र और न ही लिंग (Gender) कोई बाधा है!
पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है, और प्रवेश निःशुल्क है,
सिफारिश की आवश्यकता नहीं है – जो लोग चाहते हैं वे स्वीकार कर सकते हैं –
वे यीशु राजा के साथ बैठ सकते हैं! जब वे ऐसा करेंगे –
उनके हृदय नए होंगे, उनका पहनावा बदल जाएगा, और उनका शरीर पवित्र आत्मा
का मंदिर बन जाएगा,
उनके मुँह में एक नया गीत होगा और उनके विचार मसीह के होंगे – वे ईश्वर के लोग हैं!

जो रथ पर चढ़े हैं।
यीशु मसीह की घोषणा करेंगे–
जिन्होंने उन्हें रथ में बुलाया है और स्वीकार किया है!
जैसे–जैसे रथ आगे बढ़ेगा, परमेश्वर के लोग,
दुनिया के लोगों को
सड़कों, गलियों, दुकानों और इमारतों में पुकारेंगे, और कहेंगे –
'हे, सभी प्यासे लोगों, सुसमाचार के रथ पर चढ़ो,
धन की आवश्यकता नहीं है, मन की आवश्यकता है,
अगर तुम चढ़ोगे, तो तुम्हारी आत्मा बच जाएगी और
दाऊद से वादा किया गया अनुग्रह तुम्हें मिलेगा!'
वे उन्हें दिन–रात पुकारते हैं! वे परमेश्वर की सेना हैं!

प्रियों,
पाँच महाद्वीप समस्याओं से भरे हुए हैं जब तक लोग पाँच घाव नहीं देखते
उन्हें सिर्फ समस्याएँ ही दिखाई देंगी!

कारण क्या है? उनकी सभी समस्याओं का कारण पाप है!
जब तक उन्हें पाप का उत्तर नहीं मिल जाता
वे बिना किसी बाधा के भविष्य में नहीं चल सकते!

परमेश्वर का वचन कहता है, 'मैं पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा' (भजन 51:5)
यह इस वचन के साथ समाप्त नहीं होता,
लेकिन बाइबल के 31,102 वचनों में यह बात प्रतिबिम्बित होती है।
'निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है' (1 राजा 8:46)
यह इस अध्याय के साथ समाप्त नहीं होता,

बल्कि बाइबल के सभी 1,189 अध्यायों में इसकी गूंज है!
जब मनुष्य स्वयं को पहचानता है
तो उसे पता चलता है कि यीशु कौन है।
वह सुसमाचार रथ पर चढ़ता है और सुसमाचार का प्रचार करता है!
सुसमाचार रथ पर कौन चढ़ता है?
वह महायाजक नहीं जिसने यीशु को अस्वीकार किया,
न ही वह पिलातुस जिसने यीशु से प्रश्न किया,
वह यहूदा नहीं जो यीशु से क्रोधित था,
बल्कि वह जो यह जान लेता है कि वह पापी है!
वह सुसमाचार रथ पर चढ़ जाता है – और परमेश्वर की संतान बन जाता है!
वह सुसमाचार का प्रचार करता है – और परमेश्वर की सेना बन जाता है!

प्रियों,
दुनिया में कहीं भी पाप करने वाले लोगों और परमेश्वर के लोगों,
दुनियाँ की सेना और परमेश्वर की सेना के
लिये जनगणना नहीं की जाती
विश्व की सेना और परमेश्वर की सेना।
यह तो मूर्खतापूर्ण माना जाएगा!
लेकिन जिसने एक शब्द से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की
उस परम शक्तिशाली जो समुद्र की लहरों को नियंत्रित करता है
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है: वे लोग कौन हैं जिन्होंने पाप किया है और परमेश्वर के लोग कौन हैं!

जन्म तिथि संसार के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन स्वर्ग में पुनर्जन्म की तिथि की आवश्यकता है!
संसार को साफ कपड़ों की आवश्यकता है, लेकिन स्वर्ग को धार्मिकता के कपड़ों की आवश्यकता है!
जो लोग सृष्टिकर्ता के सामने खड़े होने की अपनी आवश्यकता को समझते हैं,
वे नम्र होंगे, टूटेंगे और पश्चाताप करेंगे!

वे यीशु के साथ भोज करेंगे! और परमेश्वर की संतान बन जायेंगे!

प्रियों, आदम के पास क्या बुद्धि थी?
उत्पत्ति 2:19 के अनुसार, पाप के विष से उसका हृदय भर जाने से पहले,
उसी ने आकाश के पक्षियों और मैदान के जानवरों का नाम रखा था!
परमेश्वर ने आदम को उनका नाम देते हुए देखा और आज तक कभी भी
उनका नाम नहीं बदला!

उसने उसका नाम शेर रखा और आज भी उसे शेर ही कहा जाता है!
उसने उसका नाम चील रखा और आज भी उसे चील ही कहा जाता है!
आकाश के पक्षी, मैदान के जानवर और पानी सभी को आज भी उसी नाम से पुकारा जाता है!
आदम के पास कंप्यूटर नहीं था, आदम का ज्ञान, विचार और स्मृति एक शक्तिशाली कंप्यूटर से भी अधिक था जब तक उसने स्वयं को परमेश्वर की छवि में सुरक्षित नहीं रखा!
जब तक पाप का जहर उसके हृदय में प्रवेश नहीं कर गया!
इसी तरह, आदम की शारीरिक शक्ति क्या थी?
वह अकेले ही अदन की वाटिका की जुताई करने में सक्षम था जिसके लिए शायद 100 से अधिक ट्रैक्टरों की आवश्यकता होती!
वह एक अद्भुत किसान था जो बगीचे की देखभाल करता था!
यह उसकी सामर्थ नहीं थी, यह परमेश्वर की सामर्थ थी!
जब तक उसने परमेश्वर के स्वरूप में स्वयं को सुरक्षित नहीं रखा!

लेकिन जिस दिन पाप के जहर ने उसके हृदय पर कब्जा कर लिया,
वह अपंग हो गया! शर्म और डर से अपंग!

उसने स्वयं को पत्तों से ढकने और पेड़ों के पीछे छिपने की कोशिश की,
लेकिन ऐसा करने में असमर्थ रहा और उसे शर्मिंदा होना पड़ा।
यह शर्मिंदगी कब दूर हुई?
जब प्रभु यीशु मसीह को शर्मिंदा किया गया और क्रूस उनकी मृत्यु हुई
"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि
उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे,
वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए! (यूहन्ना 3:16)।
जो प्रभु के प्रेम और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अमूल्य बलिदान को समझता है
और उस पर विश्वास करता है,
वह 'नाश नहीं होगा'! जिसका सही अर्थ है 'नहीं मरेगा'

क्यों? वह परमेश्वर की संतान है!
कैसे? विश्वास से!
किस पर? प्रभु यीशु मसीह पर!
विश्वास उसे सांस लेने में सक्षम बनाता है –

वह श्वांस क्या है? वह सुसमाचार कार्य की श्वांस है!
क्या वह परमेश्वर की सेना नहीं है?

विचार करें कि सुसमाचार कितना सामर्थ्यपूर्ण है,
यह एक पापी मनुष्य को परमेश्वर की संतान में बदल देता है!
परमेश्वर की लोगों को परमेश्वर की सेना बनने में सक्षम बनाता है!
परमेश्वर के लोग दिन–रात यीशु की आराधना करते हैं!
परमेश्वर की सेना समय–असमय यीशु का प्रचार करती है।!
परमेश्वर के लोग पाप से घृणा करेंगे,
परमेश्वर की सेना पापियों से प्रेम करेंगे,
और दूसरों को सुसमाचार रथ पर चढ़ने के लिए आमंत्रित करेंगे!
यदि आप उस कतार में खड़े हैं
तो अंतिम दिन तक परमेश्वर सेना व प्रजा के रूप में खड़े रहें!
यदि आप उस कतार में नहीं हैं,
तो प्रभु आपको उस कतार में शामिल होने में सक्षम बनाए!
प्रभु आपको परमेश्वर के लोग और परमेश्वर की सेना बनने के लिए प्रेरित करें,
और आपको सुसमाचार का प्रचार करने की आशीष दें।
बिना किसी भय के, बिना किसी लज्जा के, बिना किसी देरी के स्वयं को बदलें।
कर्जदार के रूप में, आइए हम सुसमाचार रथ पर सवार लोगों की मदद करें।
आमीन। ■

प्रार्थना

यीशु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपने जो सुसमाचार सभी को दिया है
वह सभी भाषाओं में उच्चारित हो,
ताकि पाप और अवसाद के बोझ से,
बीमारी, वित्तीय समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं से, भविष्य और
शैतान के भय से मुक्ति मिले।
परमेश्वर की संताने परमेश्वर के लोगों के साथ मिलकर चलें और
परमेश्वर की सेना के रूप में आगे बढ़ें, प्रभु,
पवित्र आत्मा को उंडेलें टखने,
घुटने या कमर तक नहीं बल्कि एक नदी की तरह लोगों को
कलवरी तक ले जाने दें
लोगों को परमेश्वर के लोग और अंततः परमेश्वर की सेना बनने दें
पाप समाप्त हो जाए, पवित्रता बढ़े, शाप मिट जाए और आशीष
उमड़ पड़े।
पिता, कृपया अपने पुत्र की महिमा के लिए हमारे साथ ऐसा करें
कृपया पवित्र आत्मा के माध्यम से ऐसा करें!
हमारी आँखें इसे देखें और आपकी स्तुति करें,
यीशु के नाम में, आमीन!

बढ़ें और बहुगुणित हो!

पिछले अंक में हमने प्रभु यीशु मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहन के बाद पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के माध्यम से नई कलीसिया के गठन पर मनन किया था। कलीसिया को कई विरोधों का सामना करना पड़ा। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक गवाह है कि यीशु मसीह के लहू के द्वारा से गठित कलीसिया किसी भी ताकत से हिल नहीं पाई। कलीसिया उसी प्रतिकूल परिस्थिति में बढ़ने लगी। "इस प्रकार से यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला और उसकी उन्नति होती गई, और वह प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शांति में चलती और बढ़ती गई" (प्रेरितों के काम 9:31)। आइए हम इस वचन पर ध्यान दें।

लूका ने उस दिन से कई घटनाओं को लिखा है जब से कलीसिया अस्तित्व में आयी। इसमें यहूदा के स्थान पर मत्तियाह को चुनना, पतरस और यूहन्ना को कैद करना, हनन्याह और सफीरा की मृत्यु और प्रेरितों द्वारा कलीसिया में मौजूद समस्याओं को संभालने के तरीके शामिल हैं। ये सभी घटनाएँ आश्चर्य को उत्पन्न करती हैं। इसके पश्चात् कुछ प्रतिकुल घटनाएँ हुई जैसे की स्तिफनुस की मृत्यु, कलीसिया का बिखराव और शाऊल का धार्मिक उत्साह। लेकिन इन सबने कलीसिया की वृद्धि को कभी रूकने नहीं दिया। विश्वासीयों की संख्या बढ़कर 3000 से बढ़कर 5000 हो गई। इथियोपियाई अधिकारी का पश्चाताप्, फिलिप्पी शहर में आन्नद और चेलों की संख्या में वृद्धि ने कलीसिया की वृद्धि को और उत्साहित किया। हालाँकि परेशानियाँ और असफलताएँ थीं, किन्तु वे विश्वास के साथ स्थिर थे। विरोधों को देखने के बाद विश्वासी घरों के भीतर सीमित नहीं हो गए थे। कलीसिया यह सोचकर लोगों को यहूदिया और सामरिया में सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजने में संकोच नहीं करता था कि उनकी अपनी जरूरतें हैं। यह कलीसिया की शक्तिशाली गुणवत्ता को प्रकट करता है। लूका कलीसिया की आध्यात्मिक स्थिति के बारे में बात करता है जो शुरूआती कलीसिया में देखी गई थी।

सबसे पहले कलीसिया में शांति थी। शांति के लिए ग्रीक शब्द EIRENEN ईरइनेन है। इसका अर्थ है कि उनकी आत्मा शांत थी या वे अपने हृदय में संतुष्ट थे। कलीसिया को एक तरफ यरूशलेम के महायाजक और दूसरी तरफ शाऊल द्वारा दिए जा रहे कष्टों का सामना करना पड़ा। तत्कालीन रोमन सम्राट कालीगुला यरूशलेम के मंदिर में अपनी मूर्ति रखना और लोगों को उसकी पूजा करने के लिए मजबूर करना चाहता था। इसलिए मुख्य याजकों से लोगों को थोड़ी राहत मिली। परमेश्वर अपनी योजना को पूरी करने के लिए सभी तरीकों से काम करता है। लूका तीन स्थानों अर्थात यहूदिया, सामरिया और गलील को निर्दिष्ट करता है जो अपने सिद्धातों और संस्कृति में भिन्न हैं। लेकिन सुसमाचार ने उन्हें एकजुट कर दिया। जो लोग सुसमाचार से प्रभावित हुए, वे प्रेरित की शिक्षाओं में बढ़ने लगे। ये शांति के दिन उनके आत्मिक उन्नति के लिए उन्होंने व्यतीत किए और जब

वे क्लेशों का साम्हना कर रहे थे, तो उन्होंने स्वंय को विश्वास में डटे रहने और उनका साम्हना करने के लिए तैयार किया। वर्तमान संसार में हम जिस शांतिपूर्ण समय का आन्नद लेते हैं, उसका उपयोग आत्मिक रूप से उन्नत होने के लिए किया जाना चाहिए, यही वह पाठ है जो हम इस अंश से सीखते हैं।

दूसरा, कलीसिया आत्मिक रूप से बढ़ने लगी। आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए ग्रीक शब्द ओइकोडेमेओ OIKODEMEO का उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ है निर्माण करना, बनाना, दृढ़ रहना, स्थापित होना इत्यादि। यह आत्मिक रूप से बढ़ने पर भी जोर देता है। इसलिए कलीसिया विश्वास में दृढ़ होने लगी और इस हद तक बढ़ने लगा कि दूसरों को इसके बारे में पता चल गया। जब यीशु कहते हैं कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा" तो उसी शब्द ओइकोडेमेओ OIKODEMEO का उपयोग किया जाता है। इफिसियों 4:11–15 में पौलुस बताता है कि उसने कलीसिया का निर्माण कैसे किया। आध्यात्मिक रूप से बढ़ना पूरा या पूर्ण उन्नत होना है। पौलुस उन लोगों के विषय में लिखता है जो इन आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करेंगे(पद 15)। इसलिए उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाएं, जब तक की हम सबके सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएं।

कलीसिया निर्माण का चिन्ह क्या है? लोग विश्वास और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में बढ़ते गए। वे पूर्ण और परिपूर्ण हो गए। कलीसिया ने सेवकों को प्रभु में सुसज्जित होने के लिए प्रोत्साहित किया। इसलिए, वे मसीह में बढ़ते चले गए। इस प्रकार जिन लोगों को कलीसिया बनाने के लिए बुलाया गया था, उनके विश्वासयोग्य स्वभाव के कारण कलीसिया फलने–फूलने लगी। लोग उनके पहनावे, कलीसिया में उनके द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों, उनके कलीसिया जाने के तरीके और उनके द्वारा जिये जाने वाले संयमित जीवन को देखकर दूसरों को पवित्र और धर्म निष्ठा होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लेकिन, क्या कलीसिया विश्वास और परमेश्वर के ज्ञान में फल–फूल रही है? क्या आपस में मेल–मिलाप कर रहे हैं? क्या लोग सत्य का सही ढंग से पालन कर रहे हैं? क्या हम मसीह में पूरी तरह से बढ़ रहे हैं? क्या हमारे पास इन प्रश्नों के जवाब हैं?

तीसरा, लूका परमेश्वर के ज्ञान के विषय में लिखता है। आरंभिक कलीसिया में परमेश्वर का भय था। भय के लिए यूनानी शब्द फोबोस PHOBOS है। यहाँ इसका अर्थ काँपना या डर से दूर चले जाना नहीं है, प्रेरितों के काम 16:6, 19:23, 22:4 हम पाते हैं कि परमेश्वर का भय आशा, सम्मान, आराधना और आज्ञाकारिता जैसे अच्छे काम को उत्पन्न करता है। फिर, हमें उन सभी चीजों को छोड़ देना चाहिए जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती हैं और उसके हृदय को परेशान करती है। हमें उस पर विश्वास करना चाहिए, उसकी आराधना करनी चाहिए और उसके लिए काम करना चाहिए। हमें उसकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। यही वह कलीसिया होगी जिसमें परमेश्वर का भय होगा।

अंत में कलीसियाएँ पवित्र आत्मा के सहयोग और सांत्वना से बढ़ती गईं। सांत्वना के लिए यूनानी शब्द पाराकेलसी PARAKLESI का उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ है, दिलासा देनेवाला या शांति देनेवाला। दिलासा देनेवाला शब्द पवित्र आत्मा के लिए इस्तेमाल किया जाता है जब यीशु उसका वर्णन करते हैं (यूहन्ना 14:16,26)। इसका कारण यह है कि पवित्र आत्मा उन लोगों के हृदयों में रहता है जो प्रभु यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं। न केवल वह सभी परिस्थितियों में हमारी सहायता करता है और हमें विश्राम देता है बल्कि वह हमेशा हमारे करीब खड़ा रहता है। वह हमें वह सब करने के लिए स्मरण दिलाता है जो यीशु ने सिखाया है। हमें इसे महसूस करना चाहिए और पवित्र आत्मा के कार्यों का उत्तर देना चाहिए। तब हम उस कलीसिया के रूप में बढ़ सकते हैं जो आरम्भिक दिनों में बढ़ती जाती थी।

आज, कलीसिया की उन्नति क्या है? हम अपनी कलीसिया की वृद्धि को देखने के लिए किस मापदंड का उपयोग करते हैं? क्या कलीसियाएँ आत्मा के लिए एक उत्तर है? क्या सेवा का विधि आराधना का उत्तर है? क्या इमारतों और भूमि क्षेत्र में वृद्धि कलीसिया में वृद्धि है? क्या हम आँसू से भर नहीं जाते जब हम देखते हैं कि जो लोग यीशु के लोहू से खरीदी गई कलीसिया का नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध थे, वे अब कपड़े, पैसे, भौतिकवाद और सत्ता के चंगुल में हैं और विश्वासियों को स्वर्ग ले जाने की बजाय नरक की ओर ले जा रहे हैं? यहूदिया, गलील और सामरिया की कलीसियाओं में जो अच्छे काम, विश्वास और आशा देखी गई थी, वह हमारी कलीसियाओं में कैसे देखी जा सकती है? जब हम शुरूआती कलीसिया के पद–चिन्हों पर चलते हैं, तो मानव–मस्तिष्क प्रभु यीशु मसीह द्वारा खरीदी गई कलीसिया की वृद्धि को रोक नहीं सकता है। यह लगातार बढ़ेगी और फलती–फूलती रहेगी, यही वह सच्चाई है जो प्रेरितों के काम 9:31 में प्रकट किया गया है। ■

प्रभु उनके आँसुओं को पोंछ दें!

तेलंगाना के उत्कुर क्षेत्र से सुसमाचार प्रचारक एडम की पत्नी श्रीमती राहेल एडम (45वर्ष) 01.06.2021 की सुबह प्रभु के पास चली गई। वह मानसिक रूप से बीमार थीं, और उनके अंग एक के बाद एक काम करना बंद कर रहे थे। चिकित्सा सहायता भी उनकी मदद करने में असमर्थ थी। हम तेलंगाना में उनकी सेवकाई के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं। प्रचारक एडम और उनके बच्चों रत्ना और रक्षिता के लिए प्रार्थना करें कि प्रभु उन्हें अपनी शांति व सांत्वना प्रदान करें!

भाई वेंकटेशन डैनियल रामनाथपुरम जिले के सुसमाचार प्रचारक हैं। उनकी पत्नी श्रीमती प्रिया (33वर्ष) 10.06.2024 को प्रभु के पास चली गई। श्रीमती प्रिया अपने पति के लिए सेवकाई में एक बड़ी सहायक थीं और प्रभु में दृढ़ थीं। 13.05.2024 को वे एक सड़क दुर्घटना की शिकार हुई जिसके बाद से उनका लगातार इलाज चल रहा था किन्तु अब वे पुनरूत्थान के लिए अनंत विश्राम में चली गई। कृप्या उनके 5 वर्षीय बेटे जोशुआ, भाई वेंकटेशन, उनके माता–पिता और परिवार के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें कि प्रभु की शांति इनके साथ बनी रहें!

कटनी के स्वामी की स्तुति हो

जेया सिंह सर और उनके परिवार ने प्रभु से यह प्रतिज्ञा की की वे प्रथम पीढ़ी के विश्वासियों के लिए एक आराधना भवन बनाने के बाद ही अपना स्वंय का घर बनायेंगे। इसलिए, उन्होंने 2012 से थोड़ा हिस्सा बचाना आरम्भ कर दिया। हमारा प्रभु जो भले काम को पूरा करने की इच्छा रखता है, उसने इस कार्य को संभव बनाया। 19.05.2024 को आन्ध्र प्रदेश के मान्यम जिले की तलहटी में स्थित वेंकयालगेडा कार्य क्षेत्र में परमेश्वर की महिमा के लिए एक आराधना भवन को समर्पित किया गया। पलायमकोटई से 5 लोगों की एक समूह के रूप में हम कार्यक्षेत्रों में गए और परमेश्वर ने जो कुछ भी हमें बताया वह यह था कि, "परमेश्वर की योजनाएं परमेश्वर के लोगों के माध्यम से पूर्ण होती है"। परमेश्वर भाई जेया सिंह और उनके परिवार को बहुत आशीष दें।

पुनः हम ने 6 जून के दौरान आन्ध्र प्रदेश में अराक्कू घाटी की यात्रा की। श्रीमती ग्लोरी पॉलराज और उनके परिवार की इच्छा थी कि वे अपनी अच्छी चीजें अर्पित करें जो परमेश्वर ने उन्हें दी हैं। इस परिवार ने पक्काबू कार्यक्षेत्र में एक आराधना भवन बनाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया। परमेश्वर के अनुग्रह से, इसे 09.06.2024 को समर्पित किया गया। कार्यक्षेत्रों में भरपूर फसल थी और सेवा का सहयोग करने वाले लोगों के हृदयों में बहुत आन्नद था। हम प्रभु यीशु की स्तुति करते हैं जो अपनी इच्छा के अनुसार इस महान योजना को पूरा कर रहा है।

– क्रिस्टोफर, जैमसन सेवकाई दल के साथ।

यीशु मेरा जीवन और सामर्थ्य

सच्चे परमेश्वर की खोज और जानने की इच्छा बचपन से ही मेरे हृदय में थी। जब मैं छोटा था, तभी से मैंने सच्चे परमेश्वर के बारे में जानने के लिए कई पुस्तकें पढ़ी किन्तु मुझे कुछ जवाब नहीं मिला। यहाँ तक कि इसमें मेरे दोस्त भी मेरी सहायता नहीं कर पाए। एक दिन मेरी मुलाकात सबल लेईकाई गाँव में आए सुसमाचार सेवक से हुई। उसने मुझे एक सुसमाचार का पर्चा दिया और परमेश्वर के प्रेम के विषय में बताया। जैसे–जैसे में यीशु के नाम के बारे में और अधिक जानने लगा, मैं आन्नद से भर गया। मुझ अनुभव होने लगा कि यीशु में पापों की क्षमा, पवित्र जीवन और अनंत जीवन ही स्वर्ग पहुँचने के मार्ग हैं। मैंने 08.05.2024 को जीवन के लिए बहुत संघर्ष किया। लेकिन क्रूस पर मृत्यु को जीतने वाले यीशु ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा। उसने मुझे एक नया जीवन दिया। अब, मैं बाइबल अध्ययन समूहों और आराधनाओं में यीशु के नाम की महिमा कर रहा हूँ। हाँ, यीशु ही मेरी साँस और मेरा जीवन है! *– इतोमाचा सिंह, मणिपुर।*

समर्पण पत्रिका की सदस्यता के लिये ऑनलाइन बैंक विवरण

A/C Name: VISHWA VANI SAMARPAN
Bank: STATE BANK OF INDIA
A/C No.: **1040 845 3024**
IFSC Code: **SBIN0003870**
Branch: ANNANAGAR WEST, CHENNAI

Please update us with transaction information so that we acknowledge with receipt
✆ 044-26869200

हृदय बदल गए हैं और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए द्वार खुल गए हैं।
सुसमाचार क्षेत्रों में विश्वास करने वाले और सहयोग करने वाले सभी लोग भी बढ़ रहे हैं! कटनी के स्वामी की स्तुति हो।

परमेश्वर की संतान तब तक एक साथ एकत्रित होते रहें
जब तक सुसमाचार प्रचारक एक लाख गाँवों तक न पहुँच जाएं और राज्य का सुसमाचार प्रचार न कर लें।

01 SATNAMI YOUTH CAMP, TILAI,
CHHATTISGARH – 15-17, MAY 2024

02 KURUKH BELIEVERS MELA, DANGBUDA,
CHHATTISGARH – 17-18, MAY 2024

03 WEST TAMILNADU STATE MEET 2024,
COIMBATORE – 18-19, MAY 2024

04 TELANGANA STATE MEET 2024,
TIRUVALLA – 20-22, MAY 2024

06 JHARKHAND – CHHATTISGARH STATE MEET 2024,
SILIGURI – 23-25, MAY 2024

07 EZRA CAMP, BALANGIR,
ODISHA – 29.05.2024

सेवकाई के दर्शन से संबंधित बीज राज्य स्तरीय सभाओ, मेलों, युवाओं को आत्माओं की कटनी के लिए प्रशिक्षण और एज्रा शिविरों में बोया जाता है।
प्रार्थना करें कि ये बीज 30 गुणा, 60 गुणा और 100 गुणा फल दें।

05 ANDHRA PRADESH STATE MEET 2024,
TIRUVALLA – 23-25, MAY 2024

08 ORAON BELIEVERS MELA, NAWATOLI, JHARKHAND – 05-07 JUNE 2024

“यह केवल परमेश्वर ही है
जो बीजों को
बढ़ाता है”

1 कुरिं. 3:7

नेटवर्क चेयरमैन की ओर से...

प्रिय भाईयों एवं बहनों,

यीशु मसीह के नाम में आपको हमारा नमस्कार।

मैं प्रभु यीशु मसीह को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे 24 मई 2024 को सुबह की रविवार की सेवा के दौरान हिमालय के कलिम्पोंग में प्रेस्बिटेरियन चर्च में और हिमालय फ्री चर्च में दोपहर की सेवा के दौरान उसके वचन को प्रचार करने में सक्षम बनाया। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कलिम्पोंग में 200 से अधिक आराधना भवन/कलीसियाएं हैं जो 14.02.2017 को एक जिला बन गया। वर्त्तमान में, हमारे पास वहाँ कोई क्षेत्रीय सेवा नहीं है और हमारे पास दो डेवलपमेंट कार्यकर्ता हैं। ऐसे विश्वासी हैं जो बचत बक्सों के माध्यम से हमारी सेवकाई को बनाए रखते हैं। इस सेवा में कुछ और विश्वासियों को भी बचत बॉक्स मिले। जब मैं इस पहाड़ पर था, तो मुझे याद आया कि यहाँ 34 साल पहले क्या हुआ था।

यह 1990 के दशक की बात है जब भाई एमिल जेबासिंह ने भारत और पड़ोसी देशों में बोली जाने वाली भाषाओं में रेडियों के माध्यम से सुसमाचार प्रचार करने के लिए बड़े कदम उठाए। मैं तब हैदराबाद में था। अन्नन ने मुझे कलिम्पोंग जाकर एक तिब्बती व्यक्ति को खोजने के लिए कहा जो तिब्बती भाषा में सुसमाचार प्रचार कर सके। मैं हैदराबाद से भुवनेश्वर गया। वहाँ से मैं भाई मन्ना व्हिटसन के साथ कोलकाता गया और हम दोनों सिल्लिगुड़ी गए।

सिल्लीगुड़ी में उतरने के बाद मुझे पता चला कि कलिम्पोंग एक शहर है जो सिल्लिगुड़ी से 100 किलोमीटर दूर है। बस स्टैण्ड पर लोग हमें उदासीनता से देख रहे थे। क्योंकि बस सेवा एक हफ्ते से बंद थी। गोरखालैण्ड के लिए लड़ाई चरम पर थी और परिवहन बंद था! हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें क्योंकि हमें अपना काम पूरा किए बिना ही वापस लौटना पड़ता। उस समय हमारे पास एमिल अन्नन को सूचित करने के लिए कोई फोन नही था। हमने एक जीप देखी जो कलिम्पोंग की चढ़ाई पर जा रही थी और भीड़ होने के बावजूद हम उसमे बैठ गए। जब हमने घाटियों मे बहती तीस्ता नदी को देखा तो हमारा सिर चकराने लगा। यह पहाड़ों पर 5 घंटे से ज्यादा की यात्रा थी। जब हम कलिम्पोंग शहर पहुँचे, तो हमारे साथ यात्रा करने वाले उतर गए और तुरंत गायब हो गए। वहाँ कोई भी व्यक्ति और दुकानें नहीं थीं। हम भूखे थे और हमारे पास नल के पानी के अलावा कुछ भी नहीं था। हमारे हाथ में पता होने के बावजूद हमें वहाँ तक ले जाने वाला कोई नहीं था। हमें ठंड के मौसम से उस मार्ग पर पैदल चलना पड़ा जो पूरी तरह से सुनसान था!

अगर हम सिल्लीगुड़ी की तलहटी में होते, तो हम वापस लौट सकते थ। लेकिन अब, हम सिल्लीगुड़ी भी नहीं लौट सकते थे! मैं खुश था क्योंकि भाई मन्ना व्हिटसन मेरे साथ थे। जब शाम होने वाली थी, एक सेना का व्यक्ति हमारे पास आया और पूछा कि हम इस मौसम में वहाँ क्यों हैं और हमें कहाँ जाना है। वह वेल्लोर का एक तमिल सज्जन था। उसने हमारे बारें में चिंता दिखाई और कहा कि एक सेना का ट्रक उस स्थान से गुजरेगा जहाँ हमें जाना था और वह उनसे हमें वहाँ छोड़ने के लिए कह देंगे। उसने सेना के वाहन को पाने और उस गंतव्य

तक पहुँचने में हमारी मदद की।

हम राहत के साथ उस स्थान पर उतरे और पते पर दस्तक दी। चूंकि यह आपदा का समय था, उन्होंने भय से दरवाजा नहीं खोला। हमारे पास कोई और विकल्प भी नहीं था और हम वहीं खड़ें रहे। अंत में एक व्यक्ति ने दरवाजा खोला और उसमें से देखा। फिर उसने हमें अन्दर बुलाया। वह रेव्ह. पीटर रबगे थे। वह परमेश्वर के जन थे जो तिब्बती भाषा में बाइबल का अनुवाद कर रहे थे। और अपने हाथों से ही इस तिब्बती बाइबल को लिख रहे थे। मेरे लिए यह बड़े आन्नद की बात थी कि मैं उनसे मिल पाया। उन्होंने हमें गर्मागर्म चाय और नूडल्स दिया। उन्हें हमारे ठहरने व्यवस्था सी.एन.आई. चर्च के अतिथि गृह में कर दिया था जो उनके घर के पास ही था। हम सुबह में परेशान थे लेकिन रात में हमने प्रभु की स्तुति की! हमने उन तरीकों की गिनती करके प्रभु की स्तुति की, जिनसे उसने हमें अद्भूत तरीके से आगे बढ़ाया है। हम परमेश्वर के काम में विश्वास के साथ आगे बढ़ें और इसलिए उसने हमें आश्चर्यजनक तरीके से आगे बढ़ाया। वह आज भी हमारी अगुवाई करता है।

अगली सुबह, हमने विश्ववाणी रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से तिब्बती लोगों के लिए तिब्बती भाषा में सुसमाचार फैलाने के बारे में रेव्ह. पीटर से बात की। उन्होंने खुशी–खुशी कहा कि यह उनकी इच्छा और इसमें रूचि भी है और वे अगले दिन कहा कि वे परमेश्वर के एक और जन से मिलवाएंगे जो बहुत सहायक साबित होगा। अगले दिन, उन्होंने हमें ऊपर–नीचे चढ़ाया और पास के पहाड़ में एक जगह पर पहुँचाया। यह हमारे लिए एक नया लेकिन बहुत कठिन रास्ता था! किन्तु हम उनके सक्रिय और सहज रूप से हमारे आगे बढ़ने को देखकर आश्चर्यचकित थे। उन्होंने हमें और तेजी से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। यह वह समय था जब हमारे पास दूरसंचार सुविधाएँ नहीं थीं जहाँ हम उन्हें पहले से बता सकते थे कि हम उनसे मिलने आ रहे हैं। वह हमें एक घर में ले गए जो पहाड़ के दूसरी तरफ घाटी में था। उस बड़े घर के पास एक बच्चों का घर था और वहाँ बहुत सारे बच्चे थे! हम उस घर में रेव्ह. थेकचेन से मिले और जब हमने रेडियो पर सुसमाचार प्रचार करने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता बतायी, तो उन्होंने प्यार से हमारे निवेदन को स्वीकार कर लिया। उन्होंने बताया कि उनके पिता हिमालय में साधु सुन्दरसिंह के साथ काम करते थे। हमने सही व्यक्ति तक हमें पहुँचाने के लिए प्रभु को धन्यवाद दिया। हम इस खुशखबरी को एमिल अन्नन के साथ बांटना चाहते थे। हम केवल सिल्लीगुड़ी में ही ट्रंक कोल/दूरभाष को बुक कर सकते थे।

हमने रेव्ह. पीटर को धन्यवाद दिया और जब हम सिल्लीगुड़ी के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू करने वाले थे, तो हमें पता चला कि भूस्खलन के कारण सड़कें बंद कर दी गईं थीं। हिमालय में ऐसा होना आम बात है। उस खतरनाक रास्ते से नीचे आने का हमारे पास कोई और रास्ता नहीं था। हम वहाँ कुछ दिन रूके। हम पहाड़ों, घाटियों,नदियों,खूबसूरत फूलों से भरे छोटे–छोटे घरों को देखकर आन्नदित थें। चूँकि हमें भाषा नहीं आती थी, इसलिए हम लोगों से बातचीत नहीं कर पा रहे थे। लेकिन परमेश्वर ने हमे उस कार्य को पूरा करने में मदद की जिसके लिए हम पहाड़ पर चढ़े थे।

अगले अंक में, मैं अपनी सेवकाई के अनुभवों को लिखूँगा जहाँ परमेश्वर हमारे आगे चला और हमारा नेतृत्व किया!

हैदराबाद
12.06.2024

मसीह में आपका
पी. सेल्वाराज

परमेश्वर की संतान होने का विशेषाधिकार
परमेश्वर की सेना की जिम्मेदारी

– रेव्ह. डॉ. इम्मानूएल ग्नानाराज, निर्देशक – प्रेयर नेटवर्क

मसीह में प्रियों,

भाई एमिल जेबासिंह द्वारा लिखा गया एक अनमोल और सरल गीत इस प्रकार है:

मैं यीशु को स्वीकार करूँगा,
न दुनिया को, न इंसानों को,
मैं यीशु को स्वीकार करूँगा
मैं अपनी खुशी कैसे व्यक्त करूँ? मैं यीशु का अनुसरण करूँगा... मैं यीशु के विषय में बताऊँगा...

हाँ, क्या हम उस खुशी का वर्णन कर सकते हैं जो हमें तब मिलती है जब हम यीशु को स्वीकार करते हैं, उसका अनुसरण करते हैं और उसके बारे में घोषणा करते हैं? जब हम यीशु को स्वीकार करते हैं तो हमें पापों की क्षमा, शांति और आन्नद का आश्वासन मिलता है और सबसे बढ़कर, हमें जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हो जाता है और हम स्वर्ग के नागरिक बन जाते हैं। उस जन्मसिद्ध अधिकार और नागरिकता के महत्व के बारे में जानना अच्छा है। इतना ही नहीं, जब हम यीशु के बारे में घोषणा करते हैं तो हम बहुत आन्नदित होते हैं क्योंकि जब कोई पापी पश्चाताप् करता है तो स्वर्ग में अत्यंत आन्नद होती है।

जो व्यक्ति यीशु को स्वीकार करता है वह परमेश्वर की संतान बन जाता है। जो इस सुसमाचार का प्रचार करता है वह परमेश्वर की सेना में एक सैनिक है। क्या हम इस पर मनन कर सकते हैं?

1.क्या आप परमेश्वर की संतान हैं?

जन्मसिद्ध अधिकार:

विद्वान बाल गंगाधर तिलक ने 1890 में स्वराज शब्द का उच्चारण किया था। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नारा बन गया। क्या आप जानते हैं कि यह शब्द कहाँ से आया है? यह जन्मसिद्ध अधिकार और नागरिकता शब्दों से निकला है। अमेरिका की भूमि के नियम के अनुसार, उनकी भूमि पर जन्म लेने वाले सभी बच्चों को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में नागरिकता दी जाती है। लेकिन भारत के नियम में विदेशी नागरिकों के लिए कुछ बदलाव है। यदि किसी बच्चे के पिता और माता दोनों भारतीय हैं, तो उसकी नागरिकता उसका पूर्ण जन्मसिद्ध अधिकार है।

नागरिकता, बोलने की स्वतंत्रता, बिना किसी हथियार के शांति से एकत्र होने का अधिकार और संघ और महासंघ बनाने का अधिकार है। यह भारत के किसी भी हिस्से में रहने का अधिकार भी देता है। यह संसोधन 30 दिसंबर 1195 को अधिनियम 57/1955 के रूप में पारित किया गया था। भारतीय नागरिकों को विदेशों में जो स्वतंत्रता मिलती है, वह पासपोर्ट के पहले ही पन्ने पर दिखाई देती है जहाँ लिखा होता है, भारत के राष्ट्रपति की ओर से, ये भारत गणराज्य के राष्ट्रपति के नाम से अनुरोध और आवश्यकता है। वे सभी लोग, जिनका संबंध वाहक को बिना किसी बाधा के स्वतंत्र रूप से जाने देने से है और उसे हर प्रकार की सहायता और सुरक्षा प्रदान करने से है, जिसकी उसे आवश्यकता हो।" यह जानना अत्यंत

महत्वपूर्ण है कि यह अधिकार और स्वतंत्रता प्रत्येक भारतीय नागरिक को उसके जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में दी गई है।

स्वर्ग के नागरिकः

इस दुनिया में, स्वतंत्रता और जन्मसिद्ध अधिकार नागरिकता के द्वारा से आते हैं। जब मनुष्य को अपनी मृत्यु के बाद दूसरी दुनिया में प्रवेश करने की आवश्यकता होती है जो कि परमेश्वर का राज्य है, तो वह दूसरे जन्म के माध्यम से इसकी नागरिकता प्राप्त करता है। यीशु ने इस बात को यहूदी अधिकारी नीकुदेमुस को यूहन्ना 3:1–21 में समझाया था। यीशु ने उत्तर दिया,"मैं तुमसे सच–सच कहता हूँ यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता"। नीकुदेमुस ने उससे कहा, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया तो कैसे जन्म ले सकता है?" क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?"आप अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश नहीं कर सकते"! यीशु ने पद 5 और 6 में समझाया कि यह पर्याप्त नहीं है कि एक व्यक्ति को शारीरिक रूप से ही जन्म लेना चाहिए बल्कि आत्मिक रूप से भी। उसके भीतर के मनुष्य को फिर से जन्म लेना आवश्यक है। यीशु ने उत्तर दिया कि जब हम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं जो क्रूस पर सम्पूर्ण संसार के पापों के लिए बलिदान हुआ तो अपने विश्वास के द्वारा हम आत्मा में फिर से जन्म ले सकते हैं (यूहन्ना 3:16)। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए हमें यूहन्ना 1:12 अवश्य ही पढ़ना चाहिए। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उन्हें उसने परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दियां यह स्वर्गीय पासपोर्ट या नागरिकता है हमें तब मिलती है जब हम विश्वास के द्वारा दोबारा जन्म लेते हैं। जिन लोगों ने इसे प्राप्त किया है, उन्हें मृत्यु दण्ड और नरक का भय नहीं है। क्योंकि यीशु ने यूहन्ना 5:24 में कहा कि जो लोग यीशु को स्वीकार करते हैं, उन्हें अनंत जीवन मिलेगा। "मैं तुमसे सच–सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नही होती, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है" (यूहन्ना 5:24)। क्या आपको परमेश्वर की संतान होने की नागरिकता मिली है? क्या आप इसके आन्नद को अनुभव कर सकते हैं?

2. क्या आप परमेश्वर के सैनिक हैं?

परमेश्वर की प्रत्येक संतान के लिए दो पहलू हैं। एक अधिकार है, और दूसरा उत्तरदायित्व है। परमेश्वर की संतान के हर बच्चे को परमेश्वर के संतान होने का अधिकार है और इसलिए उसके साथ एक कर्तव्य भी है। यह क्या है? मत्ती 21:28–30 पढ़ें। पिता ने कहा, "हे पुत्र आज जाकर दाख की बारी में काम कर"। बेटे का कर्तव्य है कि वह आगे आए और काम करे। यीशु की आज्ञा है, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकूस 16:15)। परमेश्वर की संतान के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम परमेश्वर के राज्य का निर्माण करें। पौलुस कहता है कि सुसमाचार प्रचार करना उसका कर्तव्य है और "यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ तो तो मुझ पर हाय"(1कुरि.9:16)। "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे" (मत्ती 11:28,29)।

जब हम अपने पापों का बोझ यीशु के चरणों में लाते हैं, तो हमें विश्राम मिलता है। किन्तु जब

हम अपने कंधों पर पाप का बोझ उठाये फिरते हैं, तो यह हमारी आत्मा और हमारे आंतरिक मनुष्य को विश्राम नहीं देता है। जब हम सुसमाचार को प्रचार करने की जिम्मेदारी लेते हैं, तो हमें वह शांति और आन्नद मिलता है जो हम अनंत काल तक जीते हैं। में तुमसे कहता हूँ कि इसी रीति से स्वर्ग में एक मन फिराने वाली पापी के विषय में भी इतना ही आन्नद होगा जितना कि निन्यानबे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं (लूका15:7)। यदि सुसमाचार का प्रचार करना स्वर्ग में बहुत आन्नद को लाता है, तो आप कितने प्रसन्न होंगे जब आप सीधे इसमें शामिल होंगे!

क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है कि हम परमेश्वर की संतान होने के नाते न केवल उसके द्वारा दी जाने वाले आशीषों का अनुभव करें, बल्कि शैतान के विरूद्ध भी लड़े। जो अंधकार में हैं, हमें उन्हें अंधकार से प्रकाश में लाने और शैतान की बंधन से छुड़ाकर परमेश्वर के पास लाने की जिम्मेदारी दी गई है (प्रेरितों के काम 26:18)। क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए (1पत.5:8)। हमें शैतान का विरोध करने के लिए जोश दिखाना चाहिए।

हमारे आस–पास ऐसे लोग हैं जो अंधकार में जीवन जी रहे हैं। उन्हें दाएँ हाथ और बायें हाथ के बीच का अंतर नहीं पता और वे पाप में जी रहे हैं। क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है कि हम उन्हें पवित्र जीवन जीने का मार्ग दिखाएँ और उन्हें पापों की क्षमा का सुसमाचार सुनाएँ? इसलिए शैतान के विरूद्ध खड़े होने के लिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लें (इफि. 6:11–18)।

क्या आपको परमेश्वर के योद्धा होने का अनुभव प्राप्त हुआ है? क्या आप उस आन्नद का अनुभव कर रहे हैं? ■

यह परमेश्वर का कार्य था

परमेश्वर ने हमारे हृदयों में सुसमाचार क्षेत्र में विश्वासीयों के लिए आराधना भवन बनाने की इच्छा को डाला। परमेश्वर ने स्वंय ही इच्छा पूरी की। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के पटादी कार्य क्षेत्र में एक आराधना भवन को 10 मार्च 2024 को सतनामी विश्वासीयों के लिए समर्पित किया गया। "यह तो यहोवा की ओर से हुआ है, और यह हमारी दष्टि में अद्भूत है" (भजन सं. 118:23)। जब हमने देखा कि प्रभु ने हमारे माध्यम से सुसमाचार क्षेत्र में 5वीं कलीसिया खड़ी की है, तो हमने प्रभु में आन्नदित होकर उसके नाम की महिमा की।

– सैमसन रविचद्रंन और उनका परिवार, चैन्नई

कार्यक्षेत्र के समाचार

स्तुति – प्रार्थना

यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है,
और मेरे मुक्तिदात परमेश्वर की बड़ाई हो (भजन संहिता 18:46)

जम्मू कश्मीर

परमेश्वर की स्तुति होः भाई कालाराम जो प्रभु के प्रेम से दूर थे उन्होंने पश्चाताप किया। 5 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। 4 परिवारों को सुसमाचार के माध्यम से नया जीवन मिला। चदरकोट क्षेत्र में सेवकाई के लिये नए सम्पर्क प्राप्त हुये।

प्रार्थना करें: कार्यकर्ता मोहनलाल की पत्नी रजनी जो सड़क दुर्घटना के कारण चोटिल हो गयी हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये। इस कार्यक्षेत्र में नए सेवकाई क्षेत्र प्रारम्भ होने के लिये। 8 युवा जिन्होंने पूर्णकालीन सेवकाई के लिये स्वयं को समर्पित किया, उनके प्रशिक्षण के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

हिमाचल प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति होः बांगरन क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण

कार्य पूर्ण हुआ। इस कार्यक्षेत्र के कई गाँव में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से सेवकाई के लिये द्वार खुला। कार्यकर्ता अंकित कुमार के परिवार को प्रभु ने बच्चे की आशीष दी। कई लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: 4 परिवार जो घीना विश्वासियों की संगति में शामिल हुये, वे विश्वास में दृढ़ होने के लिये। इस क्षेत्र में चलने वाली सेवकाई के स्थानों में पवित्र आत्मा कार्य करने के लिये। बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

उत्तराखण्ड

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र में आयोजित चिकित्सा कैंप के माध्यम से कई लोग लाभान्वित हुये। खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने अपने नए जन्म के अनुभव को प्राप्त किया। सुसमाचार सेवकाई के माध्यम से कई लोगों ने अनन्त जीवन के विषय में जाना। महेश जो नशे के आदी थे, उन्होने सुसमाचार सुना और नशा छोड़ दिया। प्रतीत नगर आराधना भवन के नवीनीकरण के लिये प्रभु की स्तुति हो।

प्रार्थना करें: 5 वेब केन्द्रों में सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारम्भ होने के लिये। पवन सिंह के हृदय में प्रभु कार्य करने के लिये। बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। इस क्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पंजाब

परमेश्वर की स्तुति हो: युवा कैंप के माध्यम से 18 युवाओं ने स्वयं को प्रभु यीशु के लिये समर्पित किया। इस क्षेत्र में कई लोगों ने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। कार्यकर्ता बलजिंदर के परिवार को प्रभु ने

बच्चे की आशीष दी। 40 गाँव में आयोजित रात्रि सभा के माध्यम से हमें सेवकाई के लिये नए सम्पर्क मिले।

प्रार्थना करें: 20 युवा जिन्होंने स्वयं को पूर्णकालिन सेवकाई के लिये स्वयं समर्पित किया। गुरदासपुर और भठिंडा जिले में क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से सेवकाई प्रारम्भ होने के लिये। 5 कार्यक्षेत्रों में आराधना भवन के परिसर की चार दिवारी का निर्माण होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

हरियाणा

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र में कई युवाओं ने स्वयं को प्रभु यीशु के लिये समर्पित किया। अर्जुन और आशा को प्रभु यीशु के नाम में चंगाई मिली, वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। 8 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। अम्बाला और पलवल क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुला।

प्रार्थना करें: 4 स्थानों में दबोरा कैंप आयोजित करने के लिये किए गए प्रयासों के लिये। जनाचोली क्षेत्र में आयोजित चिकित्सा कैंप के लिये। इस क्षेत्र में बोया गया परमेश्वर का वचन लोगों के हृदय में कार्य करने के लिये। इस कार्यक्षेत्र में पूर्णकालिन सेवकों की आवश्यकता के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान

परमेश्वर की स्तुति हो: जयंती लाल के परिवार ने प्रभु की सेवा के लिये स्वयं को समर्पित किया। मांगीलाल को लकवे के रोग से चंगाई मिली। 7 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। किकापाड़ा और पडौली क्षेत्र में सेवकाई के लिये नए सम्पर्क प्राप्त हुये।

प्रार्थना करें: कार्यकर्ता दम्पति मनोज और सुनीता को प्रभु बच्चे की

आशीष देने के लिये। मोतिया गाँव में जो लोग शराब के आदी हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये। लाडजी दामोर जिनका सड़क दुर्घटना के कारण पैर टूट गया हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान – उदयपुर प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः 7 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। प्रभुलाल के परिवार को प्रभु ने बच्चे की आशीष दी। खोजियों की सभा के माध्यम से 25 लोगों ने प्रभु यीशु मसीह के प्रेम को जाना और बाइबल अध्ययन समूह में शामिल हुये। देवीलाल और राजूदी के परिवार को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिला।

प्रार्थना करें: कोटरा और पनरवा क्षेत्र में आराधना समूह प्रारम्भ होने के लिये। अंबादरा ग्रामीणों के हृदय में पवित्र आत्मा कार्य करने के लिये। लीला के परिवार को प्रभु बच्चे की आशीष देने के लिये। झाकड़ा क्षेत्र के विश्वासियों के माध्यम से आसपास के गाँव में सुसमाचार प्रचार होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

उत्तर प्रदेश – भोजपुरी प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से सेवकाई के लिये कई गाँवों को चिन्हित किया गया। 5 स्थानों में बाइबल अध्ययन समूह प्रारम्भ किया गया। विश्वासी संदीप कुमार का घर आराधना केन्द्र बना। मुशानी और राजापुर क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुला।

प्रार्थना करें: इस क्षेत्र में कई परिवार जो विश्वासियों की संगति में शामिल हुये हैं, वे परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ने के लिये। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के लिये। 23 स्थानों में सामुदायिक विकास केन्द्र प्रारम्भ करने के लिये किए गए प्रयासों के लिये। मोहन

गुप्ता जो टी.बी के रोग से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

बिहार

परमेश्वर की स्तुति होः 208 गाँव में खोजियों की सभा आयोजित किया गया। इस क्षेत्र में कई लोगों ने सुसमाचार सुना और प्रभु यीशु के लिये अपने हृदय को खोला। रूपसपुर क्षेत्र में आयोजित बच्चों की सेवकाई के माध्यम से कई बच्चे लाभान्वित हुये। 10 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। इस क्षेत्र में सेवकाई के लिये 50 गाँव को चिन्हित किया गया।

प्रार्थना करें: 80 विश्वासियों के बच्चों की उच्च शिक्षा के लिये प्रभु के मार्गदर्शन के लिये। 4 स्थानों में आराधना भवन के निर्माण के लिये पंजीकरण एवं अनुमति प्राप्त करने के लिये। 175 आराधना समूहों में आयोजित विश्वास महोत्सव के माध्यम से विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये। 20 युवा जिन्होंने पूर्णकालीन सेवकाई के लिये आवेदन किया है।

पश्चिम बंगाल – दार्जिलिंग जिला

परमेश्वर की स्तुति होः हमें प्रभु के अनुग्रह द्वारा चाय बगान में कार्य करने वाले श्रमिकों के मध्य सुसमाचार बाँटने का अवसर मिला। खोजियों की सभा के माध्यम से 6 लोगों ने अपने पापों का पश्चाताप किया और विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। खुले रूप से आयोजित सभाओं के माध्यम से कई लोगों ने प्रभु यीशु को स्वीकार किया। फैक्ट्रीलाइन में आयोजित चिकित्सा कैंप के माध्यम से 35 लोग लाभान्वित हुये।

प्रार्थना करें: विस्टी जोटे क्षेत्र के ग्रामीण सुसमाचार को स्वीकार करने के लिये। इस क्षेत्र के युवा पूर्णकालीन सेवकाई के लिये स्वयं

को समर्पित करने के लिये। हिमुलडायरी क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये। घोषपुकुर आराधना भवन के विस्तार के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

असम

परमेश्वर की स्तुति होः 7 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। लोपोंगटोला क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। विश्वासी सोकोल सोरेन के घर में आयोजित संगति के माध्यम से विश्वासीजन आत्मिक रूप से बढ़ रहे हैं। भौरागुड़ी क्षेत्र में 16 लोगों ने पहली बार सुसमाचार सुना।

प्रार्थना करें: ऑक्सीगुड़ी क्षेत्र के वे ग्रामीण जो नशे के आदी हैं, उन्हें नशे से छुटकारा मिलने के लिये। सोहरपुर क्षेत्र के 5 परिवार जिन्हें अपने विश्वास के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। तकार्चुक क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण कार्य पूर्ण होने के लिये, प्रार्थना करें।

त्रिपुरा

परमेश्वर की स्तुति होः 3 परिवार विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। बिशु लक्ष्मी जो चलने में असमर्थ थीं, प्रार्थना के माध्यम से वे चलने में सक्षम हुईं। 38 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: 4 क्षेत्रों में सामुदायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किया जाना है। इस क्षेत्र में जो युवा शराब के आदी हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये। बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। दुलकाई और नामंजॉय क्षेत्र में जिन लोगों ने पहली बार सुसमाचार सुना, वे वचन में बढ़ने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

सिक्किम

परमेश्वर की स्तुति होः 5 गाँव में बाइबल अध्ययन समूह प्रारम्भ किया गया। इस क्षेत्र के लोग सुसमाचार सुनने में रूचि ले रहे हैं। आत्माओं की कटनी के लिये प्रशिक्षण में भाग लेने वाले युवाओं के लिये प्रभु की स्तुति हो। इस क्षेत्र में 33 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: विश्वासी सांगे लेप्चा और उनके परिवार के माध्यम से बहुत से लोगों का उद्धार होने के लिये। 5 परिवार जो आराधना समूह में शामिल हो रहे हैं, वे परमेश्वर के प्रेम में दृढ़ होने के लिये। कार्यकर्ता नवीन दार्जी की पत्नी प्रशेल दार्जी जिनकी गर्भाशय में ट्यूमर का ऑपरेशन होना है, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

मणिपुर

परमेश्वर की स्तुति होः सुन्ना ने बाइबल अध्ययन केन्द्र के लिये अपने घर का द्वार खोला। 5 परिवार जो प्रभु के प्रेम से दूर थे, उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के प्रेम को जाना। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने सुसमाचार सुना। 2 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: आराधना समूह में शामिल होने वाले लोगों की आत्मिक उन्नति के लिये। वे परिवार जिन्होंने अपना सामान और घर खो दिया है। आपदा के दौरान 6 क्षेत्रों में क्षतिग्रस्त आराधना भवनों के पूणःनिर्माण के लिये। वामगबाल और हिरोक के लोग जो सुसमाचार में रूचि ले रहे हैं, वे आत्मिक रूप से बढ़ने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

ओडिशा – संबलपुरी प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः बलपाली क्षेत्र के 5 गाँव में सेवकाई प्रारम्भ की गयी। संबलपुरी जनसमूह के मध्य से सेवकाई के लिये 20 युवा आगे आए। परमानपुर के विश्वासियों ने आराधना भवन के निर्माण के लिये अपनी भूमि तैयार की। 8 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: टुकुरा आराधना समुह के लिये आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि की आवश्यकता हैं। सालेदी और रेंगाली कैंप क्षेत्र की कलीसियाओं के लिये साउंड सिस्टम की आवश्यकता के लिये। सेवकाई के लिये 5 साइकिलों की आवश्यकता के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

झारखण्ड

परमेश्वर की स्तुति होः बुदु क्षेत्र के 19 लोग सुसमाचार सुनने में रूचि ले रहे हैं। कजुरदाग और कटवा जिले में सेवकाई फलवंत हो रही है। 22 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। सुसमाचार कार्यों के माध्यम से क्षेत्रों में सामाजिक विकास कार्य के लिये प्रभु की स्तुति हो।

प्रार्थना करें: हराटोली और डुमरिया क्षेत्र में सुसमाचार सुनने वाले लोगों का उद्धार होने के लिये। नवाटोली क्षेत्र में आयोजित कुरूख मेला के लिये। इस कार्यक्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

छत्तीसगढ़ – चाँपा प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः राकेश ने सुसमाचार सुनने के बाद शराब का सेवन छोड़ दिया। युवा मोहन रात्रे को मानसिक रोग से चंगाई मिली। दंगबुदा क्षेत्र में कुरूख मेला आयोजित किया गया। 23 लोगों

ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: माधवी को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिलने के लिये। तिलई क्षेत्र में आयोजित युवा कैंप के लिये। भैसमा गाँव में नशे की आदत से ग्रस्त परिवारों को छुटकारा मिलने के लिये। इस क्षेत्र में आराधना समूह प्रारम्भ करने के लिये किए गए प्रयासों के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

छत्तीसगढ़ – रायपुर प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: युवा दिनेश ने सुसमाचार सुनने के बाद शराब छोड़ दिया। सरसिवा क्षेत्र में खुले रूप से आयोजित सभा के माध्यम से कई लोग लाभान्वित हुये। 5 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। विश्वासियों तिलक और प्रमिला को सुसमाचार के द्वारा नयी आशा मिली।

प्रार्थना करें: विजय विश्वकर्मा जो नशे के आदी हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये। गुल्लू आराधना समूह के लिये आराधना भवन के निर्माण के लिये, भूमि की आवश्यकता है। कोमल साहू जिनका 30 वर्षीय बेटा प्रभु में सो गया है, उनके समस्त परिवार को प्रभु सांत्वना देने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

मध्य प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति हो: 3 परिवार विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। संताष को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिला, और वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। दिनेश जो प्रभु के प्रेम से दूर थे, उन्होने उद्धार के आनन्द को प्राप्त किया। निधी के परिवार को प्रभु ने बच्चे की आशीष दी।

प्रार्थना करें: गणेश जो नशे के आदी हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये। मोहन के हृदय में प्रभु कार्य करने के लिये। पूर्णकालीन सेवकाई के लिये 20 युवाओं के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

वर्तमान समाचार

1993 से 2023 तक दुनिया भर में समुन्द्र का औसत स्तर लगभग 3.4 / 0.3 मि.मीटर प्रति वर्ष बढ़ा है। वैश्विक और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर भविष्य के रूझानों का मूल्यांकन और भविष्यवाणी करने के लिए, बेहतर निगरानी उपकरण होना आवश्यक है।

1960 से 2023 तक महासागर के शीर्ष 2000 मीटर 0.32 / 0.03 वाट प्रति वर्ग मीटर की दर से गर्म हुए, और इस दर के और अधिक बढ़ने की उम्मीद है। यह तेज गर्मी, जो पिछले 20 वर्षों में सबसे अधिक वर्त्तमान मे ही देखी गई है, यह कई दीर्घकालिक जोखिमों के साथ आती है, जैसे कि पर्यावरण में परिवर्तन जिन्हें पूर्ववत नहीं किया जा सकता है।

हे सारी सृष्टि के परमेश्वर, पृथ्वी की रक्षा के लिए संतुलित जलवायु बनाये रखने में हमारी सहायता करें।

शोधकर्ताओं ने फोर्क फर्न टेमेसिप्टेरिस ओब्लेंसोलाटा में अब तक का सबसे बड़ा जीनोम पाया है, जो न्यू कैलेडोनिया और आस–पास के द्वीपों में उगता है। इसका जीनोम सबसे पुराने रिकॉर्ड धारक, पेरिस जैपोनिका से 7 प्रतिशत बड़ा है, और मानव जीनोम से 50 गुणा से भी ज्यादा बड़ा है।

हे प्रभु, हम आपकी स्तुति करते हैं क्योंकि आपके द्वारा रचे गये जीव अत्यंत विशाल और हमारी समझ से परे हैं।

अंन्तराष्ट्रीय श्रम संगठन ने हाल ही में कहा कि दुनिया भर में बेरोजगारी की दर 2024 में 4.9 प्रतिशत पर स्थिर हो जाएगी, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ी गिरावट है। यह वृद्धि पहले की गई भविष्यवाणियों में एक बड़ा बदलाव है, जिसमें 5.2 प्रतिशत की वृद्धि का आवहान किया गया था। पुनः मूल्यांकन के बाद अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन दुनिया भर में नौकरियों के लिए थोड़ा बेहतर भविष्य देख रहा है, हालाँकि 2025 तक यह दरें अभी भी 4.9 प्रतिशत पर ही रहने की उम्मीद है।

हे प्रभु, नौकरी का इंतजार कर रहे लोगों को एक उपयुक्त नौकरी प्रदान करके उन्हें आन्नदित करें।

सेवा के लिए सम्पर्क करें

JAMMU: Vishwa Vani, C/o Ashirwad Bhawan, H.NO. 165, Lane-2, Christian Colony, New Plot, Jammu-180005. Mobile No- 9469289692, 9419287712.

PUNJAB/HP: Vishwa Vani, C/o Dr. Sony Astha Dental lab, 2-A, Ward No-13, Dev Nagari, Near Hossana Church, Behind Dr. Rajpal Hospital Camini, Pathankot, Punjab- 145001, Mobile No-9915651260.

UTTRAKHAND: Vishwa Vani, Vill. Gorakhpur Aarkediya Grant, Christian Colony Near Methodist Church Water Tank, P.o Badowala Prem Nagar, District Dehradun, Uttarakhand - 248007, Mobile: 9557968104.

DELHI: Vishwa Vani, F-11, First Floor, Vishwakarma Colony, M.B. Road, New Delhi - 110044, Ph: 0129- 4838657; Mobile No: 9910762447.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, Raj Villa 11/32/1 Indira Nagar, Lucknow, Uttar Pradesh - 226016 Mobile No- 8687951286.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, C/o Mr. Ram Kumar Joswa, Jhabra (Jalalpur) Deipur Jansa , Varanasi, Uttar Pradesh-221405, Mobile No: 9559351020

RAJASTHAN: Vishwa Vani, Mission Compound, Banswara, Rajasthan - 327001, Mobile No-9414725164.

RAJASTHAN: Vishwa Vani, C/o Abhram Ninama, 29, Jaldarshan Complex, Sanjay Park, Rani Road, Udaipur, Rajasthan - 313001, Mobile No-9602385024.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, 2/6-A, Sarvajan Colony, Akbarpur Nayapura, Kolar Road,Bhopal, Madhya Pradesh - 462042, Mobile No - 9770252588.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, C/o Mrs. Neena singh, 146 M.C.I. Colony, Near Anchal Vihar Katanga, Jabalpur, Madhya Pradesh - 482001, Mobile: 7722916665.

BIHAR: Vishwa Vani, CA/59, Near Malahi Pakri Chowk, PC Colony, Kankarbagh, Patna, Bihar-800020, Mobile No- 9110966419; 9337652667.

JHARKHAND: Vishwa Vani, C/o Kachhap Niwas, Bodra Lane Nayatoli. H.B.Road,Ranchi, Jharkhand - 834001. Mobile No-9431927472; 7909013933.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, H.No. D- 4, Shatabadi Nagar, Telibandha, Post- Ravi Gram, Raipur 492006, Chhattisgarh, Mobile No. 9826452343, 7879125657.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, Thomson Villa, H.NO-58, Ward No-17, Mission Road Bhojpur, Champa, Dist-Janjgir-Champa, Chhattisgarh - 495671, Mobile No:7987020083; 9926176754.

मेरा हृदय और घर यीशु के लिए

पिछले दो वर्ष मेरे जीवन के सबसे काले दिन थे! मुझे हर समय दो लोगों की मदद की जरूरत पड़ती थी क्योंकि मैं लकवाग्रस्त था। सुसमाचार सेवक अमरजीत मणिपुर के सेतापुर गाँव में हमेशा आते थे। उन्होंने सभी गलियों में परमेश्वर के वचन का प्रचार किया! 22.02.2024 को मैं बहुत दर्द/तकलीफ में था। इसलिए हमने उन्हें अपने घर के बगल में रहने वाले विश्वासी के द्वारा अपने घर बुलाया। उन्हें मेरे लिए आँसू बहाते हुए प्रार्थना करते देखकर

मैं भावुक हो गया। यह सब मैंने खुद को यीशु के अद्भूत प्रेम में सौंप दिया। तीन हफ्ते तक लगातार प्रार्थना करने के बाद, मैं अपने बिस्तर से उठकर बैठने में सक्षम हो गया। आज मैं बिना किसी सहायता के चल फिर सकता हूँ क्योंकि यीशु मेरे साथ हैं! हमारा घर अब सुसमाचार का केन्द्र और अंधकार में फंसे लोगों के लिए प्रकाश स्तंभ बन गया है। यीशु के नाम की प्रंशसा हो!

– इबोइमा सिंह, मणिपुर

यीशु हमारा उद्धारकर्ता है

मेरे पति को पेट की कुछ समस्याएँ थीं। जब यह समस्या अपने अंतिम चरण में पहुँच गयी, तो वे गंभीर रूप से बीमार हो गए और कुछ संक्रमणों के कारण बिस्तर पर पड़े रहने लगे। हमने इलाज के लिए अपने घर में जो कुछ भी था, सब खर्च कर दिया। हमने कई अन्य कार्यों का सहारा लिया! लेकिन इससे हमें कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ। जब हम पूरी तरह से दुःखी और निराश थे, तब सुसमाचार हम तक पहुँचा। वासावा सुसमाचार सेवक जालम सिंह के माध्यम से वचन नवगाम गाँव तक पहुँचा। यीशु की आवाज सुनकर हमारे हृदय मसीह में मजबूत हो गए, "हे सब थके और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा"। मेरे पति यीशु की सामर्थ से खड़े होने लगे और चलने में सक्षम हो गए। हम उस सुसमाचार सेवक के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं जो सही समय पर हमारे पास आयें। प्रभु की स्तुति हो। *– मैली बेन, गुजरात*

RNI REGD. NO. RN. 45019/89 | POSTAL REGD. NO. HQ/SD/180/2024-2026 - HINDI | DATE OF PUBLICATION 22.06.2024
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT - PMG/TS/HQR/SC-02/WPP/2024-2026

Return Requested: VISHWAVANI SAMARPAN
1-10-28/247, Anandapuram,
ECIL Post, Hyderabad-500062.

स्वर्गीय पिता द्वारा दिया गया उपहार उन लोगों के लिए जो प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में घोषित करते हैं और स्वीकार करते हैं- आराधना, कलीसिया, संगति और सामर्थ्यपूर्ण सेवकाई अब समय आ गया है जब लोग हर जगह प्रभु की आराधना कर रहे हैं। प्रभु की स्तुति हो!

SOURA PAILEM, ODISHA - 12.05.24

BAIDABAJA, ODISHA - 19.05.24

PEDAGUDA, ODISHA - 18.05.24

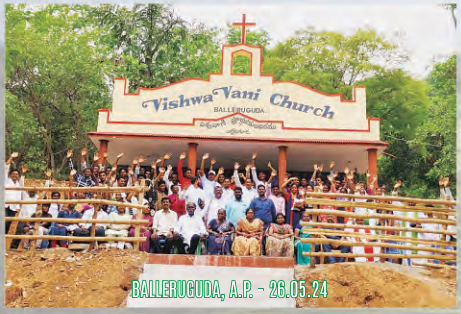

BALLERUGUDA, A.P. - 26.05.24

VENKAYALAGEDDA, A.P. - 19.05.24

SULEZARI, MAHARASHTRA - 08.06.2024

MURCHUKONA, A.P. - 19.05.24

PAKKABU, A.P. - 09.06.2024

VISHWA VANI SAMARPAN – HINDI LANGUAGE
Printed and Published by P. Selvaraj on behalf of VISHWA VANI, a registered society (Regn. No.17871 of 1987) and printed at CAXTON Offset Pvt. Ltd., 11-5-416/3, Red Hills, HYD-04. and published at 1-10-28/247, Anandapuram, ECIL Post, HYD-62. **POSTING DATE: 25.06.2024**. EDITOR: P. SELVARAJ